# किस्सागोई के आवश्यक तत्व एवं उनकी प्रकृति

# 21

डॉ. रामयज्ञ मौर्य*

**सारांश**

निश्चित रूप से अभिव्यक्ति के माध्यमों में कहानी एक श्रेष्ठ विधा है और किसी न किसी रूप में यह मानव समाज में सदा से सतत विद्यमान है। हिंदी कहानी का किस्सागोई रूप बहुत पहले से प्रचलित है। कहानी लेखन में यह यहाँ विद्यमान लोक प्रचलित मौखिक आख्यान परम्परा से ग्रहण की गयी। कीसा, किस्सा, कहनी अथवा गल्प की मौखिक परम्परा से प्रारम्भ होकर मुद्रण काल में कहानी ने व्यापक और विविध रूप प्राप्त किए। विषय–वस्तु के साथ कहानी का संरचनात्मक ढाँचा, कथन अथवा लेखन का ढंग किसी कहानी की प्रभावोत्पादकता तथा श्रेणी तय करते हैं। किस्सागोई भी कहानी की एक विशेष शैली है, जिसमें कुछ विशेष गुण या तत्त्व सन्निहित होते हैं, क्योंकि किस्सागोई मूल रूप से लोक कथाओं से संदर्भित है। अतः लोक जीवन से जुड़े अतिरंजना, कल्पना, कौतूहल, जिज्ञासा, साहसिकता, आकस्मिकता, मार्मिकता, संवेदनात्मकता, मनोरंजकता, वाचिकता, नाटकीयता, वर्णनात्मकता आदि कुछेक ऐसे अनिवार्य तत्त्व हैं जो किस्सागोई शैली की कहानियों के सृजन के लिए आवश्यक हैं। कहानी में आए सभी तत्त्वों का सामूहिक प्रभाव पाठक के मन पर अगरुगन्ध की तरह छाकर अवचेतन को झंकृत कर देता है। किस्सागोई शैली की कहानियाँ पाठक लेखक से सीधे तादात्म्य स्थापित करती हैं। यही आपसी सम्पर्क रचना को आस्वाद्य बनाता है और कहानी पाठक एवं समाज पर व्यापक प्रभाव छोड़ने में समर्थ होती है।

**मूल शब्द**

किस्सागोई, कहानी, तत्त्व, गुण धर्म।

**उद्देश्य**

निश्चित रूप से गद्य की विविध विधाओं में कहानी सर्वाधिक प्रचलित एवं सशक्त विधा है। कहानी लेखन के लिए विषय शिल्प और शैली के अनुरूप तत्त्वों का प्रयोग कहानी के प्रभाव, गुणात्मकता को और भी बढ़ा देते हैं। जैसे सृष्टि में विद्यमान विभिन्न चराचर प्राणियों के शरीर में अलग–अलग अंगों (अवयवों) की प्रधानता उनके जरूरत के अनुरूप होती है। उसी प्रकार विभिन्न प्रकार की कहानियों में अवयवों (तत्त्वों) की प्रधानता भी अलग–अलग होती है। किस्सागोई शैली की मनोरंजकता, प्रभावान्विति अन्य शैली की कहानियों से कहीं अधिक देखी गयी है। कुछ प्रमुख तत्त्व हैं जो किसी कहानी को किस्सागोई का स्वरूप देकर कहानी की रोचकता में वृद्धि कर उनकी पठनीयता को और भी रोचक बना देते हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य ऐसे तत्त्वों की तलाश और उनकी प्रकृति तथा प्रभाव को रेखांकित करना है।

*एसोसिऐट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ

कहानी एक 'शरीर' है, जिस प्रकार शरीर का निर्माण अनेक अवयवों से मिलकर ही सम्भव है, उसी प्रकार कहानी की रचना भी कई एक अवयवों (तत्त्वों) से मिलकर सम्भव है। इस पर कुछ लोगों को आपत्ति हो सकती है कि शरीर के विभिन्न अवयवों में से एक अवयव की अनुपस्थिति भी शरीर को अधूरा कर सकता है, जबकि कहानी के सभी अवयवों का किसी एक ही कहानी में रहना आवश्यक नहीं है। अलग–अलग कहानियों में कमोवेश अलग–अलग अवयव (तत्त्व) हो सकते हैं। इससे कहानी के कहानीपन पर कोई असर नहीं पड़ता, लेकिन ध्यान देने की बात है कि मैंने शरीर कहा है न कि 'मानव शरीर'। हर एक मानव शरीर के लिए तो एक ही प्रकार के तत्त्वों की आवश्यकता होती है, पर शरीर से मेरा तात्पर्य सम्पूर्ण प्राणी वर्ग का शरीर या अधिक व्यापकता में जायें तो कहानी की तुलना 'चराचर शरीर' से कर सकते हैं, जैसे– मानव शरीर का निर्माण, हाथ–पैर, नाक–कान, मुँह, पेट, पीठ इत्यादि अंगों से मिलकर बनता है, तो गाय, बैल या पशु के शरीर निर्माण में इन अंगों के अलावा सींग व पूँछ भी जुड़ जाते हैं। पक्षियों के शरीर में हाथ नहीं है, पंख है। मछली के शरीर में कई अन्य अवयव हैं पर हाथ और पैर नहीं हैं, सींग नहीं है तो क्या उसके शरीर को शरीर नहीं कहेंगे। पेड़, पौधों के शरीर में मानव शरीर या पशु शरीर जैसे अवयव नहीं होते। उनके अंग डाल, शाखाएँ तने पत्ते हैं। ठीक यही बात हम अलग–अलग कहानियों के तत्त्वों के बारे में कह सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि यह कोई आवश्यक नहीं है कि कहानी के सभी आवश्यक तत्त्व सभी कहानियों में हों। यह कहानी के रचना विद्यान, शिल्प और प्रकार पर निर्भर करता है कि अमुक कहानी में कौन–से तत्त्व आवश्यक हैं या किस तत्त्व की प्रधानता होनी चाहिए, लेकिन एक बात तो तय है कि बिना तत्त्वों के कहानी का निर्माण सम्भव नहीं है।

किस्सागोई मूल रूप से लोक कथाओं का शिल्प है। अतः इसके तत्त्व लोक जीवन से जुड़े अतिरंजना, कल्पना, कौतूहल, जिज्ञासा, साहसिकता, आकस्मिकता, मार्मिकता, संवेदनात्मकता, मनोरंजन, वाचिकता, संवाद, नाटकीयता, वर्णन और विवरण कुछेक ऐसे अनिवार्य तत्त्व हैं, जो किस्सागोई शैली की कहानियों का निर्माण करते हैं। किस्सागोई गुण धर्म के लिए इन तत्त्वों की उपस्थिति आवश्यक है।

हेनरी जेम्स के अनुसार कहानी में प्रभावान्विति का ही प्रमुख आयोजन होता है।[1] यह प्रभाव श्रोता के चेतन मन पर पड़ता है और परोक्ष रूप से सारे अवचेतन को झंकृत कर देता है। राजेन्द्र यादव के अनुसार यह प्रभाव कुहासे या अगरू गन्ध की तरह समस्त चेतना पर छा जाता है। हैरी फैनसन एवं हीडरेथ क्रीट्ज के अनुसार अन्विति का अर्थ ही है, तत्त्वों का सम्पूर्ण रूप से इस प्रकार का एकीकरण, जो विलग न किया जा सके।[2] कहने का तात्पर्य कहानी में एक साथ प्रयुक्त तत्त्वों को टुकड़ों में बाँटकर नहीं देखा जा सकता। वे अविभाज्य रहें, ऐसी स्थिति में कहानी का पूर्ण प्रभाव श्रोता या पाठक पर पड़ता है, लेकिन यह कोई आवश्यक नहीं कि कहानी के सभी अवयव उसमें आये हों। उसमें से कुछ या कोई एक–दो तत्त्व कहानी में मुख्य रूप से उपस्थित हो सकता है या केन्द्र हो सकता है और उसके प्रभाव की संप्रेश्य अभिव्यक्ति ही कहानी की सफलता होगी। जैसा कि हम पीछे स्पष्ट कर चुके हैं, जैसे विभिन्न वर्गों के शरीर के भिन्न–भिन्न अवयव हो सकते हैं, वैसे सभी कहानियों में एक ही प्रकार के

अवयव हों या कि एक कहानी में सभी अवयव हो आवश्यक नहीं, पर जितने भी अवयव प्रयुक्त हों उनके सारभूत प्रभाव को ही कहानी की प्रभावान्विति या समष्टि प्रभाव कहा जाएगा। डॉ० लक्ष्मी नारायण लाल ने समस्त तत्त्वों के सामूहिक प्रभाव को कहानी कला की मुख्य आत्मा कहा है।[3] कविता की एक पंक्ति अथवा एक छन्द से रस की निष्पत्ति हो सकती है, किन्तु कहानी का रस उसके समष्टि प्रभाव में निहित होता है।

यद्यपि सभी प्रमुख कहानीकार एवं कथा आलोचक कहानी की प्रभावान्विति पर बल देते हैं पर कहानी की आलोचना के समय उसके तत्त्वों को अलग–अलग करके ही देखा जाता है और यह आवश्यक भी है। कहानी की महत्ता वाले ही उसकी सम्पूर्णता में निहित होती है परन्तु कहानी की रचना प्रक्रिया रचना विधान की जाँच–पड़ताल उसके तत्त्वों की शल्य चिकित्सा अथवा तत्त्व विन्यास के बिना सम्भव नहीं है। इसलिए हम किस्सागोई के कुछेक प्रमुख तत्त्वों के संक्षिप्त विवेचन का प्रयास करेंगे।

साहित्य शास्त्र में काव्य के प्रमुख चार तत्त्व स्वीकार किये गये हैं– राग तत्त्व, कल्पना तत्त्व, बुद्धि तत्त्व और शैली तत्त्व। इनमें से 'कल्पना' का सर्वाधिक महत्त्व है। सभी साहित्यविदों ने एक मत से कल्पना तत्त्व के महत्त्व को स्वीकार किया है। ठीक इसी प्रकार गद्य की विधाओं– नाटक उपन्यास और कहानी में भी कल्पना तत्त्व के अति महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। किस्सागोई प्रविधि की तो बिना 'कल्पना' तत्त्व के कल्पना भी नहीं की जा सकती। तात्पर्य यह कि किस्सागोई में 'कल्पना' का प्राचुर्य होता है। विद्वानों ने "पूर्व अनुभूतियों की पुनर्योजना से अपूर्व की अनुभूति उत्पन्न करने की क्रिया या शक्ति को 'कल्पना' कहा है। 'कल्पना अंनागत का अवगाहन करने वाली है। निराकार वस्तुओं और भावों को आकार देना तथ्य को चित्रमय बनाना, चरित्र या पात्र के व्यक्तित्व को साक्षात करना घटना की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करना और भाव को जगाने वाले चित्र अंकित करना कल्पना के द्वारा ही सम्भव है।[4] चरम मनोविज्ञान के अनुसार 'अचेतन' अनुभूतियों से भी साहित्यकार और अपनी कृति के लिए पर्याप्त सामग्री पाते हैं। इस सामग्री का संकलन कल्पना द्वारा होता है।"[5]

कहानियों में अलौकिक तत्त्वों का समावेश करना कल्पना के द्वारा सम्भव है। कल्पना तत्त्व के सम्बन्ध में एन०एम० पैन्जर का मत है "कथा सरित्सागर भारतीय कल्पना का दर्पण है जो आकार में ग्रीक महाकाव्य 'इंलिपड' एसं 'ओडिसी' दोनों को मिलाकर लगभग दुगुने के बराबर है।" This is the ocean of the story, this is the mirror of the India"s imagination that Somadeva has left as a legacy to posterity.[6]

रूप सृष्टि करने वाली शक्ति कल्पना है। कथा में विविध दृश्यों को सामने प्रस्तुत करना तथा उन्हें इतना रोचक बनाना कि पाठक या स्रोता उसके आकर्षण में समग्रतः बंध जाय, कल्पना का ही काम है। कल्पना के द्वारा ही अतीत को वर्तमान के रूप में सुदूरस्थ को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। हम वास्तविक संसार से जो कुछ अनुभव ज्ञान प्राप्त करते हैं या उनसे साक्षात्कार करते हैं, कल्पना के द्वारा ही उसे एक निश्चित रूप प्रदान करते हैं। वास्तव में कल्पना की शक्ति ही किसी साहित्यकार की प्रतिभा का परिचायक है। इसी कल्पना शक्ति के द्वारा ही एक किस्सेबाज रात–रात भर एक घटना से दूसरी घटना को जोड़ते हुए अघटित

दृश्य को भी घटित की तरह दिखाते हुए महफिल को जमाये रख सकता है। आदिकाल से चली आ रही समाज में प्रचलित लोक कथाएँ जिनमें काल्पनिकता का ही अंश सर्वाधिक है कि जनप्रियता और रोचकता किस्सागोई में कल्पना तत्त्व के महत्त्व को ही प्रमाणित करता है।

'अमर कोश' में कथा को ऐसा साहित्य रूप स्वीकार किया गया है, जिसमें 'कल्पना' तत्त्व की प्रधानता हो। ('प्रबन्ध कल्पना कथा' अमर कोश, 1/6/6)। इसके अनुसार कल्पना का अर्थ रचना माना गया है।

विज्ञान और साहित्य में बहुत कुछ समान है। प्रेक्षण, तुलना और अध्ययन की जहाँ दोनों में प्रमुख भूमिका है वहीं कल्पना विज्ञान और साहित्य में किसी भी सृजन का प्रथम चरण है। मैक्सिम गोर्की ने सारतत्व में कल्पना को विश्व के बारे में एक प्रकार का 'कलात्मक चिन्तन' मानते हुए कहा है, "कल्पना का अर्थ है वस्तुओं तथा प्रकृति की शक्तियों पर मानवीय गुणों, भावनाओं यहाँ तक कि इरादों को भी आरोपित करना।"[7]

एक प्राचीन यूनानी दार्शनिक क्सेनो फेंस ने कहा था कि यदि पशुओं में कल्पना शक्ति होती तो सिंह यह सोचते की भगवान एक बहुत बड़ा और अजेय सिंह है। चूहे उसका चित्रण चूहे के रूप में करते। मच्छरों का भगवान शायद एक मच्छर होता। हमारे पुराण कथाओं और दन्त कथाओं में जो देवी–देवता आते हैं वह सभी स्वभाव में मनुष्यों जैसे ही होते हैं। उनमें भी ईर्श्या, द्वेश, क्रोध, प्रेम और अनुराग आदि मनोभाव पाये जाते हैं, जो सामान्य मनुष्यों में है। कहने का तात्पर्य जैसे कल्पना के द्वारा सर्वदर्शी, सर्व शक्तिमान और सर्वोत्पादक ईश्वर का सृजन कर लिया गया है, उसी प्रकार साहित्यकार काल्पनिक पात्रों, काल्पनिक घटनाओं यहाँ तक कि काल्पनिक स्थितियों, परिस्थितियों के माध्यम से किस्से का ताना–बाना बुनता है। सारांशतः कहा जा सकता है कि सृजन के लिए कल्पना आवश्यक है। किस्सागोई प्रविधि की कहानियों को काल्पनिकता की धनी ही नहीं अपितु इस पर अतिकाल्पनिकता का आरोप भी लगाया जाता रहा है।

'कौतूहल' का किसी भी रचना को आकर्षक बनाने में रहस्य और रोमांच को बनाये रखने में विशेष योगदान होता है। कहानी का सबसे बड़ा गुण सुनने वाले या पढ़ने वाले में उत्सुकता का भाव बनाये रखना है, जितने देर वह अधिक उत्सुकता बनाये रखेगी उतनी ही अधिक सफल मानी जायेगी। जैसा कि सभी जानते हैं किस्सागोई का सम्बन्ध श्रोता समाज से था, जिस जमाने में मुद्रण कला नहीं थी और साहित्य की वाचिक परम्परा थी, उस जमाने में लोग किस्सा–कहानियाँ अनेक रूपों में कहते थे। जो घर के भीतर से लेकर व्यापक सामाजिक दायरे तक फैली हुई थी। इस वाचिक परम्परा में श्रोता समुदाय सामने उपस्थित होता था, इसलिए उसकी प्रतिक्रिया किस्से में जिज्ञासा (अब आगे क्या होगा? जानने की उत्सुकता) 'कौतूहल' मनोरंजन आदि तत्त्वों को संयुक्त करती जाती थी।

किस्सागो का श्रोता समुदाय से सीधा संवाद था। यही कारण था कि उन किस्सों में घटना का एक सतत् क्रम या उसे हम एक ऐतिहासिक विकास क्रम कह सकते हैं, एक रेखीय गति से चलता रहता है। एक घटना से दूसरी, दूसरी से तीसरी भलीभांति सम्बद्ध होती

थी। वर्णन का कौशल ही इनको प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सकता था। किस्सागोई में मनोरंजक नाटकीय और कुतूहलपूर्ण घटना–संघटन होता था, जिसे हम कथानक कह सकते हैं। कथानक कहानी का आधार है। इसके अभाव में कहानी का निर्माण प्रायः असम्भव हो जाता है। बिना कथन के तो किस्सागोई की कल्पना ही नहीं की जा सकती। किस्सागोई का कथानक प्रायः घटना प्रधान होता है, इसमें दैवयोग या संयोग का विशेष सहारा भी लिया जाता है। भारतीय साहित्य शास्त्रियों ने तीन प्रकार के कथानक बताये हैं– प्रथम– प्रख्यात इतिहास पुराण या जन श्रुति से प्राप्त कथानक जिसमें कहानीकार घटनाओं तथा तथ्यों में परिवर्तन नहीं कर सकता। दूसरा– उत्पाद्य जो समग्रतः मौलिक होता है कथाकार की हृदयस्थ मौलिक अनुभूतियाँ इसका मूल स्रोत हैं। तीसरा– मिश्रित कथानक में प्रख्यात एवं उत्पाद्य दोनों प्रकार के कथानकों का सम्मिश्रण रहता है। भारतीय साहित्य को पौराणिक गाथाओं, आख्यानों अथवा हिंदी की प्रारम्भिक कहानियों में इन तीनों प्रकार के कथानकों का प्रयोग मिलता है। कथानक की चरम सीमा श्रोता या पाठक को चौंका कर आह्लादित कर देता था और वह कहानी की संवेदना में खो जाता था। 'कुतूहल' को बनाये रखने के लिए कहानीकार चलते–चलते घटना को एक आकस्मिक मोड़ दे देता था जो श्रोता या पाठक की कल्पना सीमा से परे होता था और श्रोता या पाठक की जिज्ञासा 'कुतूहल' शान्त होने के बजाय और बढ़ जाते थे। कहने का तात्पर्य आकस्मिकता भी किस्सागोई का एक प्रमुख तत्त्व है।

'किस्सागोई और प्रेमचन्द' नामक एक लेख में बलराम तिवारी ने लिखा है, "किस्सागोई की पहली शर्त श्रव्यता का अनुकूल वातावरण तैयार किये रखना है।"[8] श्रव्यता का अनुकूल वातावरण बनाये रखने की यह शर्त ईमानदारी से तभी पूरी हो सकती है, जब किस्सागोई की उपरिलिखित तत्त्वों का समावेश उसमें हो। कहने का तात्पर्य ऐसी रचनाओं में आगे क्या होगा की जिज्ञासा पैदा करने, कालानुक्रम स्थापित करने, व्यापक कल्पना शक्ति, सहजता, मार्मिकता और पूर्ण मनोरंजन की क्षमता होनी आवश्यक है। तभी वह स्रोता को प्रारम्भ से अन्त तक बाँधे रख सकता है या पाठक एक–एक पृष्ठ से होता हुआ अन्तिम पृश्ठ तक पहुँचकर एक दीर्घ निःश्वास लेता है और बहुत कुछ पा जाने की अनुभूति कर पाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि किस्सागोई के लिए कमोवश जिन तत्त्वों की नितान्त आवश्यकता है वे हैं– श्रव्यता, सहजता, सहज संप्रेशणीयता, वाचिकता, मार्मिकता, आकस्मिकता, रोचंकता, काल्पनिकता, मनोरंजन, उद्देश्य या अभिप्राय, रोमांच, कौतूहल, अतिरंजना, निष्कर्षात्मकता, जिज्ञासा, घटना प्रधान कथानक इत्यादि।

उक्त तत्त्वों के आधार पर ही किस्सागोई के गुण धर्म भी निर्धारित होते हैं। किसी भी रचना के संदर्भ में लेखक और पाठक या किस्सागो और श्रोता के आपसी सम्पर्क से ही रचना के प्रयोजनपरक एवं सामाजिक आयाम से जुड़े होने का प्रमाण मिलता है।[9] किस्सागोई में यही आपसी सम्पर्क दोनों के बीच आत्मीय लगाव पैदा करके रचना को आस्वाद्य बनाता है। किस्सागोई कथा और पाठक के बीच के अपरिचय की दीवार को ध्वस्त करती है। किस्सागोई व्यापक पाठक समाज को मनोरंजन के माध्यम से ही सही स्वस्थ दृष्टि से देने का प्रयास भी करती है।

किस्सागोई किसी विचार को रचना के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचाने का सबसे सहज और आकर्षक ढंग हो सकता है। प्राचीन समय में किस्सागोई के माध्यम से किस्सागो समाज को जोड़ने का कार्य भी किया करते थे। इसमें एक विशिष्ट प्रकार का लोक रस होता है। धरती की सुगन्ध वातावरण की हवा की ताजगी एवं महक मिलती है। पुरानी कहानियों पर समाज से तटस्थ और उदासीन रहने का आरोप लगाया जाता है पर जहाँ तक मेरा मानना है– पुरानी कहानियाँ समाज से भले ही तटस्थ और उदासीन थीं, पर समाज उनसे तटस्थ और उदासीन नहीं था। वस्तुतः किस्सागोई की लोक रूचियाँ समाज की परम्पराओं को जीवित किये हुए हैं। इसमें "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना निहित रहती है। यहाँ मनुष्य इच्छा मात्र से सात समुद्र को लाँघता है, नौखण्ड पृथ्वी की परिक्रमा करता है। किसी भी द्वीप की अनन्य सुन्दरी को अपने पौरुष के बल पर प्राप्त कर लेता है। यहाँ स्वर्ग की अप्सराएँ और पाताल की नाग कन्याएँ पानी भरती हैं। सिंह और सर्प भी दोस्ती निभाते हैं। खूँखार से खूँखार पशु भी मनुष्य की सहायता करते हैं। मानव भी उनकी बोली भाषा सुख–दुख समझता–बूझता है। इनमें समानता का पूरा दर्शन मिलता है। इनकी सीता भी गगरी से पानी भरकर लाती है। इस प्रकार किस्सागोई भारतीय समाज का सजीव चित्रण भी करती है। कथ्य में, विषय में, पात्र चयन में व्यापक विविधता भी मिलती है। किस्सागोई के उद्देश्यों में मनोरंजन के साथ–साथ उपदेश देना, नैतिक शिक्षा, धर्म, कर्म, सामाजिकता आदि की सीख देना भी निहित होता है।

**संदर्भ**


1. Short Story Encyclopedia Britanica, Vol. 21, Page 579
2. Reading Undertaking and Writing about Short Stories, Harny Fenson and Hildreth Knityer, Page 8
3. हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास– डॉ० लक्ष्मी नारायण लाल, पृष्ठ–326
4. काव्यशास्त्र– डॉ० भगीरथ मिश्र, पृष्ठ–20
5. हिन्दी साहित्य कोश– डॉ० धीरेन्द्र वर्मा एवं अन्य, पृष्ठ– 177
6. The Ocean of Story (Vol. I, March 1924, Page XXXI) Introduction N.M. Panzer.
7. लेखन कला और रचना कौशल प्रगति प्रकाशन मास्को– हिन्दी अनुवाद, 1977, पृष्ठ–11
8. प्रेमचन्द : विविध आयाम– किस्सागोई और प्रेमचन्द– बलराम तिवारी, पृष्ठ–170
9. प्रेमचन्द : विविध आयाम– किस्सागोई और प्रेमचन्द– बलराम तिवारी, पृष्ठ–166